ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र मार्च 2018 (प्रथम)

स्वामी स्वतन्त्रानन्द बहु - उद्देश्यीय सभागार उद्घाटन समारोह

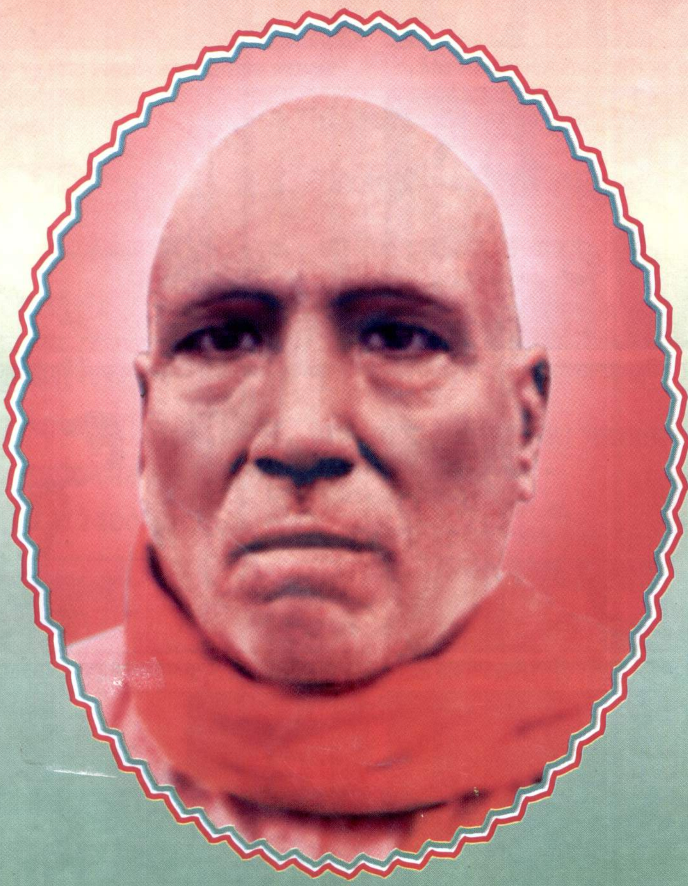

Email : aryapsharyana@yahoo.in Visit us : www.apsharyana.org

उद्घाटन समारोह में यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सर्वमित्र आर्य यज्ञ करवाते हुए।

उद्घाटन समारोह में यज्ञ में आहुति डालते हुए यज्ञमान।

उद्घाटन समारोह अपने विचार रखते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

उद्घाटन समारोह में मंच संचालन करते हुए सभामंत्री श्री उमेदसिंह शर्मा।

सभागार का उद्घाटन करते हुए केन्द्रिय इस्पातमंत्री बीरेन्द्र सिंह।

उद्घाटन समारोह में अध्यक्षीय सम्बोधन देते हुए डा० राजेन्द्र विद्यालंकार।

उद्घाटन समारोह में मुख्यातिथि को पगड़ी पहनाते हुए सभाप्रधान मा० रामपाल आर्य।

उद्घाटन समारोह में मुख्यवक्ता आचार्य सामदेव जी अपने विचार रखते हुए।

उद्घाटन समारोह में डा० सुरेन्द्र कुमार अपने विचार रखते हुए।

उद्घाटन समारोह में भजन प्रस्तुत करते हुए सभाकोषाध्यक्ष बहन सुमित्रा आर्या।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 13 अंक 27

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मार्च, 2018 (प्रथम)

1 से 15 मार्च, 2018 तक

इस अंक में....

1. आर्यसमाज और ईश्वर 2
2. ऋषिवर के उपकार 3
3. मेरे परम मित्र–आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी 4
4. कन्हैयालाल आर्य को मातृशोक 6
5. पौराणिक भाइयों से निवेदन 8
6. श्री राम की महिमा गाओ 9
7. दुर्व्यसन हटाओ–सद्‌गुण अपनाओ 9
8. आर्यों के संघर्ष की गौरव गाथा 10
9. एक प्रलाप और उसका पटाक्षेप 12
10. समाचार-प्रभाग 14

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

आर्यसमाज और ईश्वर

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, B-2, 92/7, शालीमार नगर, होशियारपुर 146001

जैसे कि आप सब जानते हैं कि आर्यसमाज शब्द का शब्दार्थ है-श्रेष्ठों=अच्छों का संगठन। इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 1875 में बम्बई (आज की मुम्बई) में

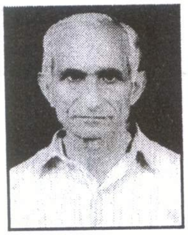

की थी। यह संगठन वेदादि शास्त्रों में प्रतिपादित विचारों, मन्तव्यों, सिद्धान्तों के प्रचार के लिए बनाया गया है जिससे संसार में आर्यता का प्रसार हो और जिससे सभी सफल, सुखी हो सकें। इस सबके परिचय के लिए जहाँ महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि जैसे विशेष ग्रन्थ बनाये, वहाँ आर्योद्देश्यरत्नमाला, स्वमन्तव्या-मन्तव्यप्रकाश सदृश लघुग्रन्थ भी प्रकाशित किये। इन में वेदादि शास्त्रों के निचोड़ को सारगर्भित शब्दों द्वारा संक्षेप में दर्शाया गया है। इनमें जीवन से जुड़ी सभी बातों का सम्पूर्ण परिचय (अतिसंक्षिप्त रूप में समाया) है। उदाहरण की दृष्टि से अध्यात्म के ईश्वर, जीव, प्रकृति, मोक्ष आदि। धर्म की दृष्टि से धर्म, स्वर्ग, तीर्थ, व्रत जैसे। यहाँ केवल अब ईश्वर पर ही विचार करते हैं।

ईश्वर-शब्द का अर्थ है-स्वामी, मालिक, नियन्त्रक। भगवान का सामान्य भाव है-अनेक तरह के ऐश्वर्य वाला। वेद आदि सभी शास्त्रों में संसार के उत्पादक, पालक, व्यवस्थापक आदि (गुण, कर्म के कर्त्ता) को ईश्वर, भगवान आदि नाम से स्मरण किया है। क्योंकि जिन भौतिक पदार्थों को हम प्रतिदिन अपने व्यवहार में लाते हैं। उनमें से अधिकतर ऐसे हैं, जिनको हमारे जैसे कारीगर बनाते हैं। हाँ, इनके जो लकड़ी, लोहा जैसे कच्चे माल हैं और जितने भी सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, धरती सदृश प्राकृतिक पदार्थ हैं, उनको हमारे जैसा कोई बनाता, चलाता दिखाई नहीं देता। निःसन्देह इन पदार्थों को बनाता हुआ, कोई चाहे दिखाई न दे। पर इनकी कार्य प्रक्रिया, चालन व्यवस्था, परिवर्तन-विकार की स्थिति यह अनुमान करा देती है कि ये सब भी किसी कर्त्ता की कृति, रची हुई रचना अवश्य हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की विविध रचनाओं के साथ आर्यसमाज के पहले-दूसरे नियम में भी ईश्वर की चर्चा है। यहाँ प्रथम नियम में जहाँ ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने वाली दो युक्तियाँ दी हैं। वहाँ द्वितीय नियम में ईश्वर के स्वरूप, गुणों का परिचय दिया गया है। इनका अन्तिम शब्द है-सृष्टिकर्त्ता अर्थात् उत्पन्न होने वालों को करने, बनाने वाला। इस नियम के अंतिम अंश (उसी की ही उपासना करनी चाहिए) में इस संसार से लाभ लेने वालों को सन्देश दिया है कि ईश्वर की कृतज्ञता (=किए हुए उपकारों) को स्वीकार करते हुए उसकी उपासना (अर्थात् उससे जुड़ने, उसका अनुभव करने का यत्न) करना चाहिए। तभी ऐसा करने पर व्यक्ति में आत्मिक बल, सन्तोष, शान्ति उभरती है।

भक्ति-इसका सबसे सरल ढंग यह है कि प्रातः शौच आदि दैनिक आवश्यक कृत्यों से निपटकर **'ओम्'** की गुंजार करें। इसकी सीधी प्रक्रिया यह है कि ईश्वर के अधिक से अधिक स्वरूप के बोधक सर्वोत्तम नाम **ओम्** को लम्बी सांस के साथ थोड़ा-सा मुख खुला रखते हुए ओठों से दीर्घ श्वास के साथ **ओ....म्** की गुंजार करे। इस गुंजार के साथ ही मन में **ओम्** वाक्य ईश्वर के स्वरूप का चिन्तन, ध्यान करे। इस प्रकार एक गुंजार के पश्चात् थोड़ा रुककर पुनः-पुनः **ओ...म्** की गुंजार करे। **ओम्** एक प्राकृतिक, स्वाभाविक ध्वनि है। अतः श्वास के साथ आप इसको जितना भी दीर्घ, लम्बा, गहरा करना चाहें सरलता से कर सकते हैं। इसीलिए इसको उद्गीथ प्राणायाम कह सकते हैं। तब ऐसी स्थिति में **'एक पन्थ दो काज'** के अनुसार प्रभु-भक्ति के साथ ही साथ शरीर की आरोग्यता, स्वस्थता, सुदृढ़ता का भी यह एक अचूक साधन बन जाता है।

उपासना को ही पूजा, भक्ति, अर्चना, वन्दना आदि भी कह दिया जाता है। उपासना की दृष्टि से यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि ईश्वर सर्वव्यापक के साथ नित्य भी है। नित्य का भाव होता है-सदा रहने वाला। ईश्वर की नित्यता का भाव है कि वह सदा सर्वत्र एकरस, एकरूप, निर्विकार है। अर्थात् वह एक ऐसा अभौतिक पदार्थ, तत्त्व है, जिसमें किसी प्रकार का कैसा भी परिवर्तन-विकार नहीं होता, न ही आता है। अतः आर्यसमाज मानता है कि ईश्वर की उपासना किसी विशेष स्थान पर किसी विशेष समय

क्रमशः पृष्ठ 7 पर......

ऋषिवर के उपकार

❑ सत्यप्रकाश आर्य, उपमंत्री, वेदप्रचार मण्डल (रेवाड़ी) मो० 9416231627

द्वापर और कलियुग के सन्धिकाल के समय आर्यावर्त की पावन धरा पर महाभारत का युद्ध हुआ। यह युद्ध प्रलयंकारी सिद्ध हुआ। आर्यावर्त भूभाग से वेदविद्या विलुप्त होने लगी। कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान के कार्यों व शिक्षा पर विराम

लगने लग गया। कुछ समय पश्चात् बौद्ध और जैनधर्म के आविर्भाव से सत्य सनातन वैदिक धर्म को गहरा आघात झेलना पड़ा। गुरुडम व पाखण्डवाद के पुजारियों ने वेदविद्या विरुद्ध आचरण करने से सत्य सनातन धर्म को बड़ी हानि हुई। जगत् गुरु आदि शंकराचार्य ने सत्य सनातन धर्म को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए पूरे देश की पदयात्रा कर चार पीठों की स्थापना की। आदि शंकराचार्य का सद्प्रयास रहा कि वैदिक मान्यताओं को अंगीकार किया जाए। शंकराचार्य ने परापूजा से मूर्तिपूजा का खण्डन किया है। निज स्वार्थवश पाखण्डियों ने मूर्तिपूजा को महिमा मण्डित किया जबकि मूर्तिपूजा जैन व बौद्ध धर्म की देन है। धर्म के प्रतिनिधियों ने उस समय मूर्तिपूजा को सत्य सनातन धर्म के आधार के रूप में स्वीकार कर लिया। इस अवैदिक कर्म से हम बार-बार युद्धों में पराजित हुए और गुलामी का दंश झेलना पड़ा। वैज्ञानिक युग में भी हम यह नहीं समझ पा रहे कि धातु, पत्थर या लकड़ी की मूर्ति जो जड़ पदार्थ है वह न हमें वरदान दे सकती और न श्राप।

लगभग 2300 वर्ष पहले महान् कहे जाने वाले सिकन्दर ने हमारे स्वाभिमान पर चोट की और देश को दासता की बेड़ियां पहनाकर चला गया। उसी समय से दासता का युग आरम्भ हो गया। यवनों ने हमें गुलाम बनाकर हमारे ऊपर राज किया और हमें हिन्दू और हमारे प्यारे देश को हिन्दुस्तान नाम दे दिया। हमने आंखें बन्द कर उसे स्वीकार कर लिया। उसके पश्चात् अंग्रेजी शासन तंत्र ने हमें दोहरी गुलामी का उपहार दिया। राजा और नवाब अंग्रेजों के गुलाम और इन राजकुलों की गुलाम प्रजा। इस उपहार के अतिरिक्त भी अंग्रेजों ने हमें इण्डियन और देश को इण्डिया नाम प्रदान कर दिया। हमने इसे भी अपना अहोभाग्य मानकर स्वीकार कर लिया। कम से कम अब तो देश को उठ खड़ा होना चाहिए कि अब कोई और हमें नया नाम प्रदान न कर दे।

दासता व पाखण्डवादी काल में छुआछात अपने चरम पर थी जिससे सामाजिक संरचना में भारी बिखराव आ चुका था। देशभक्ति और राष्ट्रीय विचारों की भावना राजकुलों को उस समय आत्ममन्थन करने के लिए विवश करती थी जब विदेशी शासन तंत्र शासक राजवंशों पर नई नकेल डालती थी। देशवासियों की दशा अति दयनीय थी। शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार व अनाचार न केवल विदेशी शासकों द्वारा किया जाता था अपितु अपने कहे जाने वाले राजकुल भी वही सब कुछ करते थे जैसा विदेशी तंत्र करता था। दयनीय स्थिति के कालखण्ड में पीड़ित मानवता का उद्धार करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती, गुरु विरजानन्द से संकल्पबद्ध आशीर्वाद लेकर सोये भारत को जगाने आए। सम्पूर्ण वेदज्ञान की ज्योति से उन्होंने सर्व-समाज में नवचेतना का संचार किया। स्वदेशी शासन व्यवस्था विदेशी शासन व्यवस्था से सदैव अच्छी रहती है। सन् 1857 के पश्चात् स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए यह प्रथम उद्घोष था। गुरुडमवाद, पाखण्डवाद, अविद्या और अन्धकार के भ्रमजाल में भारतवासी उलझे हुए थे। अपने देवताओं को छोड़कर नौ गजे पीरों की पूजा करने और कब्रों में सर पटक कर अपने भले की आशा करने वाले विवेकहीन समाज को सन्मार्ग दिखलाने का कार्य देवदयानन्द ने किया। कालजयी धर्मग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना कर विश्व को एक सन्देश दिया कि सत्य सनातन वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ धर्म है। जीव, ब्रह्म और प्रकृति त्रैतवाद के सिद्धान्त को वैज्ञानिक व तर्क आधार पर प्रमाणित किया। आर्यसमाज की स्थापना कर वैदिक विचारों के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था प्रदान की। रेवाड़ी (हरयाणा) में सन् 1879 में विश्व की प्रथम गोशाला स्थापित करवाई। गोरक्षा के लिए उनका यह क्रान्तिकारी कदम था। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम् और विश्वकुटुम्बकम्** का उद्घोष कर विश्वशान्ति का संदेश दिया। देवदयानन्द निःस्वार्थभाव से जनजागृति अभियान में लगे हुए थे और दुष्ट प्रवृत्तियों के लोग उनके जीवन के ग्राहक बन रहे थे। ऋषिवर का उद्घोष था, 'मैं परम आनन्द की समाधि को छोड़कर तुम्हें जगाने आया हूँ।' परन्तु पापियों ने उन्हें जहर पिलाकर चिरनिद्रा में सुला दिया। यह हमारे देश का दुर्भाग्य रहा कि अमृत पिलाने वाले को हमने जहर दिया।

शेष पृष्ठ 16 पर....

मेरे परम मित्र—आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

27 सितम्बर, 1949 के दिन सम्पन्न सोनी परिवार में बीकानेर, राजस्थान में माता श्रीमती पार्वती देवी और पिता श्री द्वारिकादास जी के यहाँ एक बालक पैदा हुआ। बालक बचपन से ही अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण इतना वैरागी वृत्ति का था कि जैन कॉलेज से एम.कॉम करने के बाद अचानक एक दिन घर से निकल पड़ा। यह एक अच्छी बात थी कि अपने शिक्षाकाल में ही उसका सम्पर्क आर्य विचारधारा के सज्जन पण्डित ठाकुर प्रसाद आर्य जी से हो चुका था।

यही बालक आगे चलकर आचार्य ज्ञानेश्वर के नाम से यशस्वी हुआ। आर्यजगत् की विभूति योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी महाराज से सम्पर्क होना इनके जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है। उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने गुरुकुल कालवा के आचार्य बलदेव जी से व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया। गुरुकुल कांगड़ी के उप कुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार से निरुक्त पढ़ा तथा लगभग 1986 में स्वामी सत्यपति जी महाराज से विधिवत् दर्शनों का अध्ययन किया। स्वयं दर्शनों का अध्ययन करने के बाद इन्होंने रोजड़ में ही दर्शन योग महाविद्यालय में दर्शनों का ज्ञान देकर अनेक सुयोग्य आचार्य समाज को दिए।

कालान्तर में जब वानप्रस्थ साधक आश्रम की परिकल्पना को साकारता देने का अवसर आया जो आचार्य जी ने अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य से इस आश्रम के लिए स्वयं को आत्मना समर्पित कर दिया और भव्य आश्रम का निर्माण किया। आज साधक आश्रम का जो भी स्वरूप हम देखते हैं इसके पीछे आचार्य जी का अथक परिश्रम, निष्ठा और प्रतिभा ही है। जहाँ उन्होंने दर्शन महाविद्यालय के माध्यम से संसार को सुयोग्य आचार्य दिए वहीं वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के अद्‌भुत कार्य किए। सैकड़ों ही योगशिविरों का आयोजन किया। साहित्य प्रकाशन की दिशा में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है जिसमें गुजराती भाषा में अनेक पुस्तकें तथा कुछ वेदभाष्य भी उल्लेखनीय हैं। योग और आध्यात्म विषयों पर अनेकशः पुस्तकें प्रकाशित कीं। सैकड़ों फोल्डर, चार्ट, कलैण्डर, पत्रक आदि छपवाकर निःशुल्क वितरित किए। योगेश्वर श्रीकृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के कलैण्डर छपवाकर इन महापुरुषों की सही-सही पहचान प्रचलित कराई तथा प्राचीन ऋषि-मुनियों के चित्र उपलब्ध करवाकर छपवाए। अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण करके उसके माध्यम से यज्ञ का प्रशिक्षण देकर सैकड़ों ही लोगों को प्रतिदिन यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया, अनेक नगरों में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। युवाओं के लिए व्यक्तित्व निर्माण शिविर आयोजित किए। इसके अतिरिक्त वैदिक आध्यात्मिक न्यास तथा विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास द्वारा अनेकशः सार्थक कार्य किए। विचार टी.वी. को सक्रियता देना भी इनका एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। लगभग अट्ठारह बार इन्होंने विदेश में भी प्रचार किया।

14 नवम्बर को रात्रि दो बजे फोन की घण्टी बजी तो लगा कि किसी ने गलती से इतनी रात गए फोन लगा दिया है मगर जब आचार्य सन्दीप जी ने अपने भर्राए हुए गले से बताया कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी अब संसार में नहीं रहे तो जैसे कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। फोन कट गया था मगर मेरे लिए यह समाचार बहुत ही वेदना देने वाला था क्योंकि आचार्य जी मेरे परम मित्र थे। बहुत ही अत्यधिक व्यस्तताओं के होते हुए भी सत्यप्रियायति तथा मोगा की बहिन इन्दुपुरी जी के साथ उनके अन्त्येष्टि संस्कार में भी गए। उनके पार्थिव शरीर को स्वयं अपनी आँखों से आग की लपटों में धू-धूकर जलते देखा, श्रद्धांजलि सभा में अपने सीमित उद्‌गार व्यक्त किए मगर मन आज भी विश्वास करने के लिए राजी नहीं है कि हमने एक अत्यधिक स्नेहिल व्यक्ति को खो दिया है। हम से उनका सम्पर्क लगभग 1980-81 से रहा जब वे गृह त्याग कर आए थे। बहुत काल तक वे हमारे यहाँ रहे। उस समय के तथा बाद के भी अनेक ही संस्मरण हैं जो हमारे व्यक्तिगत अधिक हैं। उनमें से कुछ का कहीं अन्यत्र या अपनी आत्मकथा में लिखने का प्रयास करूँगा। अन्तिम दिनों तक हमारे एवं हमारे परिवार के साथ उनकी वैसी ही आत्मीयता रही। सत्यप्रियायति जी में वे अपनी माँ की छवि देखा करते थे।

वे सभी के साथ मुझे अपना अभिन्न एवं परम मित्र कहा करते थे। 1983 से लेकर उनके साथ निरन्तर पत्र-व्यवहार भी होता रहता था। वे पत्र आज भी मेरी फाइल में हमारी आत्मीयता की थाती है। वे जो भी कार्य करते थे या करना चाहते थे मुझसे विस्तार के साथ चर्चा किया करते थे। विदेश से भी निरन्तर फोन द्वारा सम्पर्क में रहते थे। कहते थे कि मुझसे बात करने से उन्हें ऊर्जा और शक्ति प्राप्त होती है। अपने हर अच्छे कार्य व उनमें आए संघर्षों की मुझ से खुलकर चर्चा करते थे तथा सम्मति लेते थे और मेरी बात को अक्षरश: सत्य मानते थे। यह उनका बड़प्पन ही था कि मुझे वे अपना भगवान कहा करते थे। वे एक कर्मठ कार्यकर्त्ता, योगी, चिन्तक और लेखक तो थे ही मगर एक बहुत ही अच्छे इन्सान भी थे। उनमें कार्य करने की अद्भुत क्षमता थी। एक बार जब ठान लेते थे तो उस कार्य को पूर्णता देकर ही रहते थे। उनकी सहृदयता और संवेदना एवं व्यवहार कुशलता अनुपम थी। वे अद्भुत ऊर्जावान् व्यक्तित्व थे। मैंने कभी उन्हें धन की ऐषणा में संलिप्त नहीं देखा। मैंने श्रद्धांजलि सभा में भी कहा था कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी के रूप में हमने आज एक उच्चकोटि के चिन्तक, कर्मठ कार्यकर्त्ता और सहृदय इन्सान को खो दिया है। संयोग देखिए कि 12 अक्तूबर, 2017 को उन्होंने जो पत्र म्यांमार से लिखा है उसी में आर्य लोगों को प्रेरणा दे दी है कि आर्यसमाज का उत्थान कैसे हो सकता है।

अप्रैल, 2015 में अन्तिम बार वे हमारे यहाँ बहिन जयाबेन आर्या वानप्रस्था तथा अपने कुछ अन्य श्रद्धालुओं के साथ सुन्दरनगर आए थे। समूचा परिवार जैसे प्रसन्नता से झूम-सा उठा था और स्वयं आचार्य जी तो बस...इसी वर्ष 19 अक्तूबर को उनका अमेरिका से फोन आया था और वहाँ की परिस्थितियों से अवगत कराया था तथा कहा था कि अब अकेला विदेश नहीं आऊँगा बल्कि आपके साथ ही आऊँगा। उन्होंने इस बात पर अपनी व्यथा भी व्यक्त की थी कि कुछ विद्वान् और संन्यासी (कुछ के नाम भी उन्होंने बताए) यहाँ केवल धन एकत्रित करने के उद्देश्य से आते हैं जिससे भारत की विशेषत: आर्यसमाज की छवि धूमिल होती है। उसी दिन उन्होंने यह भी कहा था कि मैं जनवरी में आपके यहाँ आऊँगा मगर इस शर्त पर कि जनवरी में ही आप भी रोजड़ आयेंगे और दूरदर्शन के लिए प्रवचनों की रिकार्डिंग भी करायेंगे। (प्रवचनों के रिकार्डिंग के लिए वे बहुत काल से मेरे पीछे पड़े हुए थे) मैंने उन्हें वचन दिया कि हाँ हम भी जनवरी में अवश्य आयेंगे। हमारे लिए तो उनका अभाव सदा बना ही रहेगा मगर उनका यूँ अचानक चले जाना आर्यजगत् की ही नहीं बल्कि समूचे विश्व की बहुत बड़ी क्षति है। उनकी भरपाई होना तो एकदम असंभव है, मगर फिर भी हमें उनके जीवन से यही प्रेरणा लेनी है कि हम भी अपने मिशन के लिए समस्त ऐषणाओं को त्यागकर आत्मना समर्पण भाव से कार्य करते रहें। मनीषियों की यह बात सत्य है कि जीवन की सार्थकता मानव सेवा करने और यशस्वी बनने में ही है। आचार्य जी ने मनीषियों की इस उक्ति को चरितार्थ किया है इसलिए वे धन्य हैं। उपनिषद् के ऋषि का सार्थक जीवन के बारे में कहना है-'**अहं ब्रह्म, अहं यज्ञ, अहं लोका:।**'

अर्थात् हम महान् बनें, हमारा जीवन यज्ञमयी भावनाओं से परिपूर्ण हो और हम संसार में यशस्वी बनकर जीएं। आचार्य जी ने अपने जीवन में इस सार्थकता को परिपूर्ण किया है। उनके निधन का समाचार आज भी विश्वसनीय नहीं लग रहा है।

हौसलों का जहाँ भी चलन होता है,
चुनौतियां तो वहाँ शगन होता है।
पतझड़ के बाद उगती हैं नई कोपलें,
मौत के बाद ही तो पुनर्जन्म होता है॥

संपर्क-महादेव, तहसील सुन्दरनगर, जिला मण्डी
(हि०प्र०) 175018 मो० 09418053092

आवश्यक सूचना

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में वर्तमान में श्री कुलदीप भास्कर भजनोपदेशक व श्री सत्यपाल आर्य मधुर भजनोपदेशक कार्य कर रहे हैं। सभा को जो भी दानराशि देवें इनसे सभा की रसीद प्राप्त कर लेवें। सभा के नाम पर अन्य किसी को दानराशि न देवें। सभा उसकी कोई जिम्मेवार नहीं होगी।

-रमेश आर्य, सभा वेदप्रचार अधिष्ठाता

कन्हैयालाल आर्य को मातृशोक

पूज्या माता श्रीमती जमना देवी आर्या का नेत्रदान एवं देहदान कर उदाहरण प्रस्तुत किया

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान, आत्मशुद्धि आश्रम के उपप्रधान, परोपकारी सभा अजमेर के ट्रस्टी कन्हैयालाल की माता श्रीमती जमना देवी आर्या का 13 फरवरी 2018 शिवरात्रि के महान् पर्व पर मंगलवार को प्रात: 9 बजे स्वर्गवास हो गया। निधन के समय माता श्रीमती जमना देवी आर्या की आयु 97 वर्ष थी। वे अपने पीछे एक पुत्र कन्हैयालाल आर्य (चन्द्रवती आर्या), दो पुत्रियाँ श्रीमती ईश्वर देवी मुंजाल, श्रीमती पुष्पा देवी (विद्यासागर आर्य) छोड़कर गई हैं। उनके निधन के पश्चात् माता श्रीमती जमना देवी आर्या की इच्छानुसार उनका नेत्रदान निरामया चैरीटेबल ट्रस्ट को किया गया तथा शेष पूर्ण शरीर का देहदान दधीचि देहदान समिति दिल्ली के माध्यम से बर्द्धमान महावीर मैडिकल महाविद्यालय सफदरजंग दिल्ली को किया गया।

13 फरवरी सायं 4 बजे उनके निवासस्थान 4/44 शिवाजी नगर गुरुग्राम से शवयात्रा प्रारम्भ की गई। शवयात्रा में गुरुग्राम, देहली, मेवात से हजारों गणमान्य व्यक्ति एवं सम्बन्धी तथा मित्र सम्मिलित हुए। शवयात्रा घर से प्रारम्भ करके आर्यसमाज शिवाजी नगर गुरुग्राम में सम्पन्न हुई। आर्यसमाज शिवाजी नगर गुरुग्राम में वेदमन्त्रों के माध्यम से उनका भौतिक शरीर दधीचि देहदान समिति दिल्ली के माध्यम से विदा किया गया। उनके इस पवित्र संकल्प के लिए सभी लोगों ने उनके इस साहसिक कदम की प्रशंसा की और बहुत लोगों ने इस मार्ग पर चलने की इच्छा प्रकट की।

प्रेरणा सभा दिनांक 18.02.2018 रविवार दोपहर 12 बजे से आर्य विद्या मन्दिर सीनियर सैकेण्डरी स्कूल सैक्टर-7 में चारों वेदों के शतकम् यज्ञ से प्रारम्भ हुई। दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक चारों वेदों के शतकम् यज्ञों का ब्रह्मत्व गुरुकुल लोवाकलां की प्राचार्या सुश्री राजन मान एवं वेदपाठ गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया। यज्ञोपरान्त सभागार में प्रेरणा सभा दोपहर दो बजे प्रारम्भ हुई। भजनोपदेशक के रूप में युवा भजनोपदेशक श्री अंकित उपाध्याय द्वारा मार्गदर्शन किया गया। तत्पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का प्रारम्भ गुरुकुल आश्रम पाली फरीदाबाद के संचालक डॉ० ओमप्रकाश जी द्वारा किया गया। मंच का संचालन कवि हृदय श्री अशोक शर्मा जी ने किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य, आनन्दपुर कुटिया से बाई जी, साईं फाउंडेशन से श्री आनन्द रंजन जी, पलवल से स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, जामपुर सभा से श्री बी.आर. सीकरी, वैदिक योगाश्रम हरिद्वार के संचालक आचार्य अखिलेश्वर जी, गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि जी, दधीचि देहदान समिति के महामन्त्री श्री कमल खुराना जी, पौराणिक जगत् से संस्कृत महाविद्यालय पटौदी के संचालक महामण्डलेश्वर स्वामी धर्मदेव जी ने माता जी को श्रद्धांजलि दी। सभी वक्ताओं ने माता जी के नेत्रदान एवं देहदान के संकल्प की न केवल प्रशंसा की अपितु पूरे आर्य परिवार को इस पुनीत कार्य को सम्पन्न कराने के लिए आशीर्वाद दिया। दधीचि देहदान समिति दिल्ली के अधिकारियों ने अपनी श्रद्धांजलि में इस देहदान के कार्य में भागीदार बनने के लिए प्रेरणा प्रदान की।

इस श्रद्धांजलि सभा में उपरोक्त विद्वानों के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री उमेद शर्मा जी, कोषाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा आर्या जी, प्रस्तोता श्री सर्वमित्र आर्य जी, सफीदों आर्यसमाज के प्रधान, पलवल से श्री जयप्रकाश आर्य, बल्लभगढ़ फरीदाबाद से श्री देशबन्धु आर्य, श्री शिवकुमार टुटेजा, श्री होतीलाल आर्य, आचार्य ऋषिपाल जी, गुरुकुल भादस से आचार्य हरिनिवास जी, गोशाला मरोड़ा से श्री वेदप्रकाश परमार्थी जी, वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री किशनचन्द सैनी जी, आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम के प्रधान श्री लक्ष्मण पाहूजा जी, महामन्त्री श्री प्रभुदयाल चुटानी जी, मंत्री श्री धर्मेन्द्र बजाज जी, उपप्रधान श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता जी, कोषाध्यक्ष श्री नरवीर

चौधरी जी, गुरुग्राम, सोहना, बादशाहपुर, झाड़सा, बसई, सैक्टर-21, 22, 23, पालम विहार, सुशान्त लोक, डीएलएफ, सैक्टर 14, सैक्टर-10-10ए, नई कालोनी, सैक्टर-4, 7 एक्स., भीमनगर, अर्जुननगर, रामनगर, शिवाजी नगर, मॉडल टाउन, जैकमपुरा, पटेल नगर की आर्यसमाजों के प्रधान, मन्त्री तथा सभी अधिकारी, आर्य विद्या मन्दिर के प्रधान श्री सुरेन्द्र अदलखा जी, प्रबन्धक श्री नरेन्द्र कालड़ा जी, कोषाध्यक्ष नरेन्द्र तनेजा जी, आर्यवीर दल हरयाणा के उपसंचालक श्री शिवदत्त आर्य जी, सनातन धर्म केन्द्रीय महासभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र खुल्लर जी, महामन्त्री श्री देवराज आहूजा जी, पंजाबी बिरादरी महासभा के प्रधान श्री सुभाष खन्ना जी, महामन्त्री श्री अनुराग बख्शी जी, शिक्षाजगत् के पुरोधा वरिष्ठ नागरिक समिति के प्रधान श्री पी.एन. मोंगिया जी, चोटी पंचायत से श्री अमीरचन्द श्रीधर जी, कोटछुट्टा पंचायत से श्री ओमप्रकाश चुटानी जी, आनन्द पार्क समिति से श्री ओमप्रकाश अत्रेजा जी, शिवाजी नगर सुधार सभा से श्री राजेश दुआ जी, श्मशान भूमि समिति से श्री सुभाष खरबन्दा जी एवं असंख्य अन्य संस्थाओं के सभी सदस्य, अधिकारी इस सभा में सम्मिलित हुए। राजनैतिक क्षेत्र श्री धर्मवीर गाबा, श्री गोपीचन्द गहलोत, कपिल दुआ, अश्विनी शर्मा, अनिल यादव सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित हुए। वैदिक विद्वान् डॉ० सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम्, श्री मेहरचन्द सेतिया, श्री अरविन्द शास्त्री, श्री सत्यदेव शास्त्री, डॉ० उषा शर्मा उषस, श्री शिवदत्त शास्त्री, श्री रविरंजन शास्त्री, श्री मदन साहनी, श्री देशबन्धु शास्त्री, श्री ईश्वरचन्द्र शास्त्री, श्री विजय व्यास शास्त्री, डॉ० सुभाष सचदेवा, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य सहित हजारों गणमान्य व्यक्तियों ने माता जी को श्रद्धांजलि दी।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री देवव्रत आचार्य जी, परोपकारिणी सभा अजमेर के मन्त्री श्री ओममुनि जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी सहित 97 संस्थाओं के सान्त्वना सन्देश प्राप्त हुए। जीते जी रक्तदान और मरणोपरान्त नेत्रदान, अंगदान, देहदान का संकल्प लगभग 100 व्यक्तियों ने लिया। सभा के अन्त में श्री कन्हैयालाल आर्य जी ने इस दुःख की घड़ी में सान्त्वना देने के लिए सभी का आभार प्रकट किया।

आर्यसमाज और ईश्वर... पृष्ठ 2 का शेष.....

(वर्ष-मास-पक्ष-दिन-घड़ी) पर ही उसके किसी विशेष रूप को सजाकर और किसी विशेष प्रकार के वस्त्रादि पहनकर किसी भौतिक वस्तु को देकर और न ही इसके लिए लम्बी-लम्बी यात्राएं करके न ही घण्टों लाइनों में खड़े होने की जरूरत है। क्योंकि वह नित्य, सर्वव्यापक ईश्वर हमारे हृदयों में सदा विराजता है। अतः केवल दिल की भावनाओं के साथ याद करने, जुड़ने की जरूरत है। अपना प्रभु अपने दिल में है, भावना से भरने की ही जरूरत है।

ईश्वरस्वरूप—आइए! अब कुछ ईश्वर के स्वरूप पर भी विचार कर लें। ईश्वर का एक मुख्य गुण सर्वव्यापक है। सर्वव्यापक होने से वह स्वतः सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वेश्वर, सर्वाधार, सर्वकर्त्ता आदि गुणयुक्त है। सर्वव्यापक संख्या में एक ही होता है। दो होने से व्यापकता बंट जाएगी। ऐसे ही सर्वव्यापक निराकार ही होता है और एकदेशी ही साकार होता है। कर्त्ता द्वारा की जाने वाली क्रिया तभी होती है जब उसके साथ कर्त्ता का सम्बन्ध, वहां अस्तित्व होता है। संसाररूपी रचना सब जगह चल रही है। अतः उसका कर्त्ता सब स्थानों पर होने से स्वतः सर्वव्यापक सिद्ध हो जाता है। तभी वह वहाँ-वहाँ प्रकृति को प्रेरणा देकर जगत् रचता है। सर्वव्यापक होने से जब जहाँ जो कुछ होता है, वह उस-उसको अपनी सर्वज्ञता से जानता है। अतः कोई कभी-कहीं भी कुछ उससे छिपा नहीं हो सकता। अत एव वह प्रत्येक के सभी कर्मों का यथासमय यथायोग्य कर्मफल देता है। अतः यह भ्रम पालना सर्वथा निरर्थक है कि हम ऐसे-ऐसे यह बात छिपा लेंगे या इस-इससे ऐसे बच जायेंगे। किसी बात की परीक्षा, जांच सच्चाई से होती है और सच्चाई का पता कार्य-कारण के नियम से ही होता है। अतः जिस ढंग से, जैसे साधनों से, जिस स्थिति में, आपस के तालमेल द्वारा जो कार्य सफल होता है। उसी को ही उस कार्य का कारण कहा जाता है। जैसे कि रसोई में प्रत्येक तैयार होने वाला पकवान इस दृष्टि से स्पष्ट है। ठीक ऐसे ही ईश्वर की सत्ता की सिद्धि के लिए संसार को बनाने-चलाने वाले के रूप में युक्ति दी जाती है। अतः जिस स्वरूप, गुणवाला ईश्वर ऐसा कर सके। वही ही ईश्वर का स्वरूप है। इसीलिए ऊपर की चर्चा में ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए सर्वव्यापक शब्द के विचार में यह सब दर्शाया गया है।

पौराणिक भाइयों से निवेदन

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)

तुम महापुरुषों के गौरव को मिटाना छोड़ दो।
झूठे आरोपों को इन पर अब लगाना छोड़ दो।
श्रीराम जी, श्रीकृष्ण जी, तो ईश्वर के भक्त थे।
ईश्वर अवतार अब इनको बताना छोड़ दो॥
शिक्षा इनकी ग्रहण कर लो, इनके गुण धारण करो।
स्वाँग भर महापुरुषों के, अब तो नचाना छोड़ दो॥
रासलीला में न इन से, भीख मंगवाओ कभी।
ऐसा अब अपमान तो, करना कराना छोड़ दो॥
धर्मपत्नी कृष्णजी की, थी केवल एक रुक्मिणी।
काहन राधा गोपियों का, अब बताना छोड़ दो॥
है यदि कुछ भी तुम्हें, इन्सानियत का पास गर।
पत्थरों की मूर्तियों पर, सिर झुकाना छोड़ दो॥
मन के मन्दिर में प्रभु-ज्योति के दर्शन करो।
असली मन्दिर है यही, नकली ठिकाना छोड़ दो॥
काली भैरो पर करो ना, जीव हत्या को कभी।
बकरे भैंसे देवियों पर, अब चढ़ाना छोड़ दो॥
जीवित माता-पिता की, सेवा करो खिदमत करो।
मुर्दे कुछ खाते नहीं, भोजन पहुँचाना छोड़ दो॥
वक्त है अब भी संभल जाओ; तुम प्यारे भाइयो।
वेद मार्ग पर चलो, मजहबी फँसाना छोड़ दो॥
धर्म शास्त्रों को पढ़ो, सत्य ज्ञान को हासिल करो।
पुराणों की अश्लील गाथायें, सुनना-सुनाना छोड़ दो॥
बुद्धि दी परमात्मा ने, 'सेवक' इससे काम लो।
सीधे मार्ग पर चलो, अब उल्टा जाना छोड़ दो॥
सत्य धर्म धारण करो, झूठा तराना छोड़ दो॥

ब्रह्म के अनन्त होने से जहाँ-जहाँ मन जाता है, वहाँ-वहाँ प्रथम से ही स्थिर ब्रह्म वर्तमान है। उसका विज्ञान शुद्ध मन से होता है। चक्षु आदि इन्द्रियों और अविद्वानों से देखने योग्य नहीं है। वह आप निश्चल हुआ सब जीवों को नियम से चलाता और धारण करता है। उसके अति सूक्ष्म इन्द्रियगम्य न होने के कारण धर्मात्मा विद्वान् योगी को ही उसका साक्षात् ज्ञान होता है, अन्य को नहीं। (यजु०)

मनुष्य! यदि तू शान्ति का इच्छुक है तो तुझे आर्ष ज्ञान की महिमा समझनी होगी और आर्ष ज्ञान की महिमा समझने के लिए तुझे दयानन्द को भी समझना होगा।

शायद यह बात बहुत से लोगों को ज्ञात नहीं होगी कि स्वामी दयानन्द से बहुत स्थानों में और बहुत बार मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ने के लिये अनुरोध किया गया और उन्हें प्रलोभन तक दिए गये। सन् 1877 में जब वे लाहौर में ठहरे हुए थे और उन्होंने पंजाब में प्रबल आन्दोलन उपस्थित कर रखा था, तब काश्मीरपति महाराज रणवीर सिंह ने पं० मनफूल द्वारा स्वामी जी से अनुरोध किया था कि 'आप जो कुछ और कार्य कर रहे हैं किये जायें, परन्तु मूर्तिपूजा के विरोध में कुछ न कहें। यदि आप ऐसा करें तो मैं अपना धनागार आपके समर्पण कर दूंगा।' परन्तु दयानन्द ने इसका क्या उत्तर दिया? उन्होंने पं० मनफूल से कहा कि "मैं वेदप्रतिपादित ब्रह्म को सन्तुष्ट करूँगा न कि काश्मीरपति को। आप ऐसी बात मेरे सामने न कहिये।" सन् 1869 ई० में जब काशी में महाशास्त्रार्थ के कारण चारों ओर महान् आन्दोलन चला था, काशी का एक प्रसिद्ध पण्डित एक दिन, रात्रि के समय दयानन्द के पास आया और प्रार्थना करने लगा-"यदि आप अन्य सब बातों का खण्डन करें किन्तु मूर्तिपूजा का खण्डन न करें, काशी की समग्र पण्डित मण्डली एकत्र होकर आपके गले में जयमाला पहनायेगी और आपको हाथी पर सवार कराकर आपकी सवारी सारे नगर में निकाली जायेगी और आपको हिन्दुओं का अन्यतम अवतार मान लेगी।" इसके उत्तर में दयानन्द ने कहा-"मैं यह नहीं चाहता, मैं तो वेदप्रतिपादित सत्य के प्रचार के लिए आया हूँ।" पण्डित जी यह सुनकर चुप हो गये और उठकर चले गये। ऐसा कहा जाता है कि दिल्ली के निकटवर्ती किसी स्थान का एक सेठ छकड़े में एक लाख रुपया भरकर स्वामी जी के पास लाया और विनय पूर्वक उनसे बोला-"महाराज मैं यह आपकी भेंट करता हूँ, आप मूर्तिपूजा के खण्डन की बात जाने दीजिए। इसके सिवाय जो कुछ आप कहना चाहें कहते रहिये, मैं यह एक लाख रुपया आपके कार्यों के सहायतार्थ देता हूँ।"

क्रमशः अगले अंक में......

श्री राम की महिमा गाओ

श्री राम की महिमा गाओ, सकल विश्व के नर-नारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी॥
माता-पिता गुरु वृद्धों की, सेवा रघुवर करते थे।
दुखिया दीन अनाथ जनों की, पीड़ाएँ वे हरते थे।
चरित्रहीन अन्यायी पापी, श्री राम से डरते थे।
वीर सदाचारी रघुनन्दन, जग में निडर विचरते थे।
प्रजापालक धर्म धुरन्धर, दयावान थे बलकारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी॥
बाली रावण कुम्भकरण से, दुखी विश्व यह सारा था।
ऋषियों-मुनियों विद्वानों का, जग में नहीं सहारा था।
मारीच त्रिशिरा और सुबाहु, करते थे खल मनमानी।
विश्वामित्र अगस्त्य अत्री, व्याकुल थे योगी ज्ञानी।
श्री राम ने धर्म समझकर, मारे थे अत्याचारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी॥
रघुकुल भूषण श्री राम जी, अगर नहीं जग में आते।
यह भारत गारत हो जाता, सब ईश्वर भक्त कष्ट पाते।
ईश्वर भक्त सज्जनों से था, श्री राम को प्यार सुनो।
धर्म कर्म का पुण्य दान का, उनको रहा विचार सुनो।
निषादराज निर्धन खेवट से, श्री राम की थी यारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी॥
उद्धार अहिल्या देवी का, श्री रामचन्द्र ने किया सुनो।
सुग्रीव विभीषण से दुखियों को, राम ने अपना लिया सुनो।
वेद शास्त्रों के ज्ञाता अब, कहीं न ढूंढ़े से पाते।
वैदिक संस्कृति मिट जाती, सज्जन फिरते धक्के खाते।
सच कहता हूँ नर्क धाम, बन जाती यह दुनिया सारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी॥
उग्रवाद आतंकवाद अब, जग में बढ़ता जाता है।
दानव दल हुंकार रहा है, कष्ट सकल जग पाता है।
छीना छपटी मची हुई है, धर्म-कर्म सब भूल गए।
नर-नारी बन गए स्वार्थी, सत्य हो प्रतिकूल गए।
छुआछात की ऊँच-नीच की, पनप गई है बीमारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी॥
श्री राम के पुत्र-पुत्रियो, जागो धनुष उठाओ तुम।
भ्रष्टाचार की लपटों से, जलता संसार बचाओ तुम।
अर्जुन भीम बनो दुष्टों का, वीरो! वंश मिटाओ तुम।
सकल विश्व का आर्य बनाओ, स्वर्ण धरा पर लाओ तुम।
'नन्दलाल' भी श्री राम को, प्रजा प्राणों से प्यारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

'दुर्व्यसन हटाओ-सद्गुण अपनाओ' संकल्प यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज ग्राम सुनपेड़, तहसील बल्लबगढ़ (हरयाणा) के तत्त्वावधान में दिनांक 25 फरवरी, 2018 को प्रातः 10 बजे से 11.15' बजे तक, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) के प्राचार्य ऋषिपाल जी ने यज्ञ कराया। धर्मेन्द्र जिज्ञासु (मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य वीर दल फरीदाबाद) तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नन्हींसिंह/नेहा आर्य मुख्य यजमान बने।

संकल्प सत्र

1. अनेक नौजवानों ने दुर्व्यसनों से दूर रहने का संकल्प लिया।
2. महिलाओं ने विवाहों में गन्दे गीत न गाने का संकल्प लिया।
3. सभी महिलाओं व कन्याओं ने संकल्प लिया कि वे तान्त्रिक, स्याने, मुल्ला-मौलवी, पीरपूजा आदि से दूर रहेंगी।
4. आचार्य ऋषिपाल जी ने गाँव की महिलाओं को पर्दाप्रथा (घूंघट) हटाने के लिए प्रेरित किया।

सम्मान सत्र

1. ग्राम सुल्तानपुर, जिला बुलन्द शहर (उ०प्र०) में सन् 1936 ई० में जन्मे दयानन्द (अब स्वामी देवानन्द जो गाजियाबाद में रह रहे हैं) को श्री शिवसिंह तथा देवेन्द्रसिंह एडवोकेट ने शॉल, कटिवस्त्र तथा किशोरीसिंह (मुकदम), आर्य भजनोपदेशक सम्मान 5100 रुपये भेंट किए।
2. सार्वदेशिक आर्य वीर दल फरीदाबाद के संरक्षक श्री मनोहर लाल आनन्द जी तथा सन् 1975 ई० से सन् 1990 ई० तक आर्य वीर दल फरीदाबाद के मण्डलपति रहे श्री वेदप्रकाश आर्य जी (चावला कालोनी बल्लबगढ़) को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।
3. सार्वदेशिक आर्य वीर दल फरीदाबाद के सन् 1990 ई० से मण्डलपति रहे श्री होतीलाल आर्य जी को 'कर्मवीर' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

कृतज्ञता सत्र

स्वर्गीय श्री हरवीर आर्य जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन भेंट किया गया। उन्होंने ही ग्रामीण क्षेत्र में सन् 1975 ई० से 1988 ई० तक आर्य वीर दल की शाखाएं लगवाई थी। इस अवसर पर फरीदाबाद की विभिन्न आर्यसमाजों के अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की समाप्ति पर 600 लोगों में **'आओ चलें कल्याण मार्ग पर'** पुस्तिका बांटी गई तथा ऋषिलंगर आयोजित किया गया।

—धर्मेन्द्र जिज्ञासु, प्रधान आर्यसमाज सुनपेड़, तह० बल्लबगढ़ (हरयाणा) मो० 8376070712

23 फरवरी 1948 में स्वतंत्र हुआ था लुहारू

आर्यों के संघर्ष की गौरव गाथा

❑ सहदेव समर्पित, सम्पादक शांतिधर्मी, जींद (9416253826)

गतांक से आगे....

पं० जी के एक मित्र पं० गंगानन्द जी सत्यार्थी 1940 ई० में स्थानांतरित होकर लुहारू आए। आप डाक विभाग में कार्य करते थे। गंगानन्द जी ने हालात का जायजा लिया तो स्थिति उनकी सुनी हुई घटनाओं से भी भयंकर पाई। पं० जनार्दन जी और श्री चन्दूलाल जी (डाकिया) के सहयोग से ठाकुर भगवंत सिंह को सहयोगी बनाया गया। ठाकुर जी स्वयं सुधारवादी विचारधारा के व्यक्ति थे। इस प्रकार 1 अप्रैल 1940 को लुहारू में आर्यसमाज की स्थापना हो गई और इसका संबंध आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब से जोड़ दिया गया। यह लुहारू में आर्यसमाज का विधिवत् प्रवेश था। यद्यपि इससे पूर्व भी जींद क्षेत्र के धारी नाम के भजनोपदेशक बारवास गांव में प्रचारार्थ आए थे, प्रचार होने से पहले ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था और चारपाई के पावों के नीचे उनके हाथ रखकर उस पर अनेक लोगों को बैठा दिया गया था और उनसे 300 रुपये लेकर और यह प्रतिज्ञा कराकर छोड़ा गया था कि वह फिर रियासत में पैर नहीं धरेगा। हालांकि इसका उल्लेख नहीं मिलता कि श्री धारी आर्यसमाज से संबंधित थे या नहीं, पर यह स्पष्ट है कि वे सुधारवादी थे और सुधार से ही नवाब को चिढ़ थी।

आर्यसमाज की स्थापना के साथ ही आर्यवीरों का संघर्ष आरम्भ हो गया। 11 मई 1940 को आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों को बुलाकर प्रचार कराया गया। इसके दण्डस्वरूप प्रमुख कार्यकर्त्ता ठाकुर भगवंत सिंह को राज्य की नौकरी से निकाल दिया गया। पं० गंगानन्द जी को लुहारू से स्थानांतरित कर दिया गया। भगवंत सिंह के परिवार के कई लोगों को नौकरी से निकाला गया और उनकी जागीर जब्त करने की धमकी देकर उन्हें माफी मांगने को कहा गया। ठाकुर जी ने यह कहकर माफी मांगने से इन्कार कर दिया कि मैंने कोई अपराध नहीं किया है।

पं० जनार्दन जी के सहयोग और प्रेरणा से ठाकुर भगवंत जी ने 1 जून 1940 को आर्य पाठशाला खोल दी। नवाब के आतंक के कारण मकान मालिकों ने अपने मकान खाली करा लिए। तरह तरह की धमकियों के बावजूद पाठशाला अबाध चलती रही, विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती गई और एक अन्य अध्यापक भी रख लिया गया।

मई 1940 से मार्च 1941 तक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक उपदेशक व प्रचारक लुहारू क्षेत्र में प्रचारार्थ पधारे। नवाब और उसके लोगों की धमकियों, अत्याचारों और जनता पर उसके आतंक के बीच जन जागरण और प्रचार का कार्य चलता रहा। जब चौ० न्योनन्द सिंह ग्रामों में प्रचार करते थे तो लोग सुनने के इच्छुक होने पर भी प्रचार सुनने नहीं आते थे। वे सोने के बहाने गलियों में चारपाईयाँ डालकर प्रचार सुनते थे। उपदेशकों के लिए ठहरने का स्थान और भोजन नहीं मिलता था। लेकिन वे आर्यवीर रेत के टीलों को अपना ठिकाना बनाते थे और भुने हुए चनों को अपना भोजन।

मार्च 1941 में इस आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव कराने का निश्चय किया गया। इस अवसर पर तेजस्वी नेता लौहपुरुष स्वामी स्वतंत्रानन्द, तपस्या व त्याग के पर्याय भक्त फूलसिंह व अन्य अनेक ख्यातनामा उपदेशक व नेता पधारे। सरकार से नगर कीर्त्तन की आज्ञा मांगी गई। पहले तो आज्ञा दे दी गई परन्तु बाद में इसका मार्ग परिवर्त्तन कर दिया गया और नगरकीर्त्तन शहर से बाहर से निकालने को कहा गया। आर्यसमाज के लोग इस बेतुके आदेश से असंतुष्ट होकर राज्य के दीवान से मिले तो उसने कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। बाद में एक षड्यंत्र के तहत नगर कीर्त्तन निकालने की अनुमति दी गई। आर्यसमाज के लोग जुलूस निकालने का विचार त्याग चुके थे पर तहसीलदार और पुलिस इंसपैक्टर ने आग्रह किया कि आप जुलूस निकालिए पुलिस आपकी सुरक्षा के लिए रहेगी।

आक्रमण-नवाब के आतंक के कारण रियासत के लोग उत्सव में भाग नहीं ले रहे थे। नवाब ने इस पर प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रतिबंध लगा दिया था। लुहारू से बाहर से पधारे हुए लगभग 400 लोगों का समूह स्वामी स्वतंत्रानन्द जी के नेतृत्व में जुलूस के रूप में चला। साथ में जमालुद्दीन

इंसपैक्टर के साथ 25 सशस्त्र सिपाही चल रहे थे। यह वही कुख्यात इंसपैक्टर था, जिसने 1935 में सिंघानी गांव में निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलवाई थीं।

थाने के सामने उसने इधर उधर के असामाजिक लोगों को हथियार देकर इकट्ठा कर लिया। अभी अंधेरा नहीं हुआ था। इंसपैक्टर ने नमाज के बहाने जुलूस को रोकने की आज्ञा दी। आर्यों ने भी संन्ध्या करनी प्रारम्भ कर दी। जब अंधेरा उतर आया तो आगे बढ़ने की आज्ञा मिली। रास्ते पर खड़े हथियारबंद लोगों ने जुलूस को मार्ग देने से इन्कार कर दिया। इंसपैक्टर ने दूसरी गली से होकर जाने को कहा। आर्य लोग दूसरी गली से जाने लगे तो इशारा पाते ही हथियारबंद भीड़ जुलूस पर टूट पड़ी। पुलिस ने भी उनका साथ दिया। लाठी, कुल्हाड़ी, भाले न जाने क्या क्या निहत्थे आर्यों के सिरों से टकराने लगे। स्वामी स्वतंत्रानन्द पर विशेष रूप से प्रहार किए गए। पहले तो अपनी लाठी से प्रहारों को रोकते रहे। लाठी कब तक रक्षा करती! स्वामी जी के सिर पर कुल्हाड़ी से घातक वार किए गए। 60 लोग गंभीर रूप से घायल हुए। भक्त फूलसिंह, चौ० न्यौनन्द सिंह तथा गाहड़सिंह बड़ेसरा को बेहोशी की अवस्था में पुलिस ने थाने में पटक दिया। सुबह होने पर ही उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया जा सका। बाद में उनका इलाज इर्विन अस्पताल में हो सका।

स्वामी स्वतंत्रानन्द का एक नया ही रूप इस घटना में सामने आया। लोगों ने देख लिया कि ब्रह्मचर्य का प्रताप क्या होता है। वे पैदल चलकर स्टेशन पहुंचे। स्टेशन मास्टर उनके रक्तरंजित वस्त्रों और सिर के घावों को देखकर कहने लगा कि ये कैसे व्यक्ति हैं–इतने घाव होने पर भी कितने धैर्य से बैठे बातें कर रहे हैं।

इस अत्याचार का आर्यों ने सार्वदेशिक स्तर पर प्रचंड विरोध किया। प्रेस में आ जाने से यह एक मुद्दा बन गया, वहीं लुहारू के लोग भी जाग खड़े हुए। स्वतंत्रता की ज्वाला भड़क उठी। नवाब के छलकपटपूर्ण समझौतों और दमन के बीच आर्यसमाज की गतिविधियाँ चलतीं रहीं। आर्यसमाज का नए सिरे से गठन किया गया। अनेक स्थानों पर आर्य पाठशालाएँ सफलता पूर्वक चलीं।

स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता और नवाब के आतंक का प्रतिरोध करने का हौंसला विकसित होने पर 20 सितम्बर 1946 को लोहारू में प्रजामण्डल की स्थापना हुई। नवाब के प्रति आक्रोश बढ़ता ही जा रहा था। देश की आजादी की लड़ाई का समापन 15 अगस्त 1947 को हो गया, परन्तु लोहारू अभी आजादी से वंचित था। जनांदोलन को उग्र होता देखकर नवाब ने इस रियासत को बीकानेर रियासत में मिला देने की चाल चली। इस विषय में एक जनप्रतिनिधिमंडल सरदार पटेल से मिला। सरदार पटेल ने उन्हें संगठित होकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी। इसके बाद गांव खोरड़ा में हुए प्रजामंडल के अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास किया गया कि लुहारू की जनता रियासत को बीकानेर में मिलाने का विरोध करती है और इसे भारतसंघ में मिलाने का समर्थन करती है। आखिर लुहारू के लोगों, आर्यसमाज और प्रजामंडल का संघर्ष रंग लाया और 23 फरवरी 1948 को लुहारू भारत संघ में शामिल हो पाया।

सहायक ग्रन्थ-सूची

1. आर्यसमाज लोहारू का इतिहास,
2. हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास, डॉ० रणजीत सिंह
3. लोहारू बावनी का इतिहास, स्व० चन्द्रभान, पूर्व विधायक
4. वीर संन्यासी स्वामी स्वतंत्रानन्द, प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

'आर्य प्रतिनिधि' के स्वामित्व आदि का विवरण
फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	-	दयानन्दमठ, रोहतक
2.	प्रकाशन अवधि	-	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
4.	प्रकाशक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	दयानन्दमठ, रोहतक
5.	सम्पादक का नाम	-	उमेद सिंह शर्मा
	क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
	पता	-	सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
6.	उन उन व्यक्तियें के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों।		आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण आय-व्यय वहन करता है। अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है।

मैं, उमेद सिंह शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(उमेद सिंह शर्मा)

एक प्रलाप और उसका पदाक्षेप

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

आर्यसमाज रूपी धधकती सत्य की ज्वाला का प्रकाश देखकर अनेक अज्ञान-अन्धकार प्रिय मनुष्य समय-समय पर प्रलाप करते आए हैं। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द के श्रद्धावान् आर्यों ने श्रद्धा की आहुतियाँ डालकर इस अग्नि को और

भड़काकर ऐसे प्रलापों को पराभूत कर दिया। ऐसा ही प्रलाप पिछले काफी समय से मनोज दूहन नामक एक भाई करते आए हैं। अभी हमारे पास एक आर्ययुवक का फोन आया। उसने कहा कि इस व्यक्ति ने ऋषि दयानन्द को 'जाटों' को भ्रमित करने वाला व ब्राह्मणवाद के लिए कार्य करने वाला बताया है। हम पहले भी उस भाई का यह प्रलाप सुन चुके थे। अब उसका उत्तर देना उचित समझा। अपनी भावनाओं की पुष्टि हमें पं० लेखराम व श्री लक्ष्मण जी आर्योपदेशक की शैली से मिलती है। मतान्धों द्वारा ऋषि दयानन्द पर आक्षेप के उत्तर में लिखी पुस्तक 'निष्कलंक दयानन्द' (सम्पादक, प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी) में तपोधन श्री लक्ष्मण जी लिखते हैं, आर्यसमाज में स्वामी दयानन्द की भावना व पं० लेखराम की स्पिरिट व व्यवहार व व्यवहार की उपेक्षा हो रही है। जहाँ पहले आर्यसमाज प्रत्येक विरोधी तहरीर (लेख हो या पुस्तक) का इससे पूर्व कि वह जनता को भ्रमित करे, उनका उत्तर देने को सदैव तत्पर रहता था वहाँ अब कहा जाता है। इसका उत्तर देने की क्या आवश्यकता है? कौन इसको मानेगा? यह एक निरर्थक बकवाद है। इसका प्रभाव ही क्या हो सकता है। वहाँ वे पं० लेखराम के संदेश को भी उद्धृत करते हैं। जहाँ धर्मवीर आर्यपथिक ने कहा था कि ज्ञान व बुद्धि की शक्ति से समुचित उत्तर दो। असभ्य लेख हो तो स्वयं सभ्यता से उत्तर दो। धर्म विजय का यही साधन है, न कि राजकीय व कानूनी सहायता। इस सबके आलोक में ऋषि दयानन्द पर प्रलाप करने वाले भाई मनोज दूहन का हम उत्तर देते हैं। हम इस भाई से पूछते हैं कि क्या आप वही तो नहीं जो वर्षों पहले हमें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की यज्ञवेदी पर सत्संग-हवन में मिलते थे। आप उसी स्थान पर एक बार श्री कृष्ण शास्त्री (बोहर) से यह कहकर दुराग्रह कर रहे थे कि ब्रह्मचर्य से कुछ नहीं होता। श्री कृष्ण शास्त्री उस समय अपने शारीरिक व बुद्धि बल से आपको समझाने में लगे थे। मैं उस समय यज्ञवेदी पर व्याख्यान देने गया था। किसी ने सही कहा है कि पात्र से वही टपकता है जो कुछ उसमें होता है। यह तो कैसे हो सकता है कि सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में उस दयानन्द के दर्शन किए हों जो पाखण्डी पोप की पोपलीला के विरुद्ध 'जाटजी' के विद्रोह को अन्य के लिए भी प्रेरणादायक बताते हैं। शूद्रों, दलितों, स्त्रियों को विद्या का अधिकार दिलाने वाले तथाकथित मिथ्या ब्राह्मणवाद के नाम पर फैले अन्धविश्वास, पाखण्ड, आडम्बरवाद, गुरुडम के विरुद्ध उनके अनुपम सार्थक संघर्ष को जानकर भी तुम उनको विषय में यह प्रलाप करते हो? तथ्यों को जानते हुए भी जो ऐसा मिथ्या प्रलाप करे उसे क्या कहें? कर्मानुसार मनु की वर्णव्यवस्था को न समझकर भी समाज तोडक कुछ लोगों के भ्रम में उलझकर आज कुछ भाई रावण को ही अपना आदर्श मान रहे हैं।

मनोज दूहन, कहीं आपका यह उद्देश्य तो नहीं कि वैदिक धर्म से दूर होकर हमारे भाई रामपालदास को अपना आदर्श मानें? या ईसाइयत के लिए ऐसा कर रहे हो। या फिर वर्ग का नेता बनने का चक्कर आपके मस्तिष्क में चल रहा है? जिस दयानन्द के ब्रह्मचर्य की दुश्मन भी प्रशंसा करते रहे उस पर भी आपने....। सत्य का विरोध करने वाला अपने बनाए जाल में फंस जाता है। आप मानो या न मानो यहाँ आप फंस गए। यदि आपके स्तर का व्यक्ति ऐसे वर्ग का नेता बन गया तो चौ० छोटूराम, चौ० चरणसिंह के आदर्श कहाँ जायेंगे? सरदार भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह, हरयाणा के चौ० मातूराम, चौ० पीरूसिंह, डॉ० रामजीलाल, चौ० जुगलाल, जाट स्कूल रोहतक के संस्थापक चौ० बलदेव सिंह, स्वामी नित्यानन्द, स्वामी ओमानन्द, आचार्य बलदेव आदि राष्ट्र व जाति के अमूल्य लालों के आगे आपका व्यक्तित्व कहाँ टिकता है? तुम्हारे अनुसार तो ये सब दयानन्द द्वारा भ्रमित ठहराये जायेंगे? यह कैसा भ्रम था कि वे राष्ट्र की इतनी बड़ी सेवा कर गए? मनोज दूहन, आप बरहाणा (रोहतक) में जन्मे श्री जगदेवसिंह 'सिद्धान्ती' को भी भूल गए। ये और उन जैसे अनेक वीर अंग्रेजी राज्य में भी सेवा में रहकर भी

यज्ञ रचाते थे, यज्ञोपवीत पहनते थे, भारत माता की जय के नारे लगाते थे, अंग्रजों द्वारा सेना में प्रत्येक आर्यसमाजी को राष्ट्रभक्त के रूप संदेह की दृष्टि से देखा जाता था। 'यज्ञोपवीत' उतरवाने की सूचना इन फौजी भाइयों ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजी तथा जाट सभा ने इसके साथ मिलकर ही उसका संज्ञान लिया। इस बारे में आप क्या कहेंगे? जाति के लाल अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह को भी क्या दयानन्द ने भ्रमित किया था? मनोज दूहन जी, हरफूल जाट जुलानी वाले गोभक्त शहीद ऋषि के समय में ही आर्यसमाजी बन गया था। मेरठ से प्रकाशित 'आर्य समाचार' पत्र की फाइलों से आर्यसमाज के इतिहास शिरोमणि श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी ने यह तथ्य खोज निकाला था।

लाला लाजपतराय को जब अंग्रेजों ने निष्कासित घोषित किया, उनके भीरू उनका नाम लेने से भी डरते थे, उस समय हरयाणा का एक भी नम्बरदार व जैलदार अंग्रेजों के कोप से नहीं घबराया, लाला जी व आर्यसमाज का साथ नहीं छोड़ा। शास्त्रों के महापण्डित आचार्य प्रियव्रत जी, हैदराबाद के आन्दोलन के शहीद सुनहरासिंह, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान चौ० हुकमसिंह आदि किस-किस के नाम हम लें, जो दयानन्द की राह पर चलकर राष्ट्र व धर्म की सेवा कर गए। जाति का गौरव इन लोगों ने बढ़ाया या मनोज दूहन जैसे ऋषि दयानन्द पर अनर्गल आलाप करने वाले लोग बढ़ायेंगे? ऐसे लोग जाति उन्माद फैलाकर अपनी नेतागिरी चमकाने, पर्दे के पीछे खेल खेलने वाली शक्तियों से मिलकर समाज तोड़ने, धर्म की हानि करने के सिवाय और क्या उद्देश्य रखते हैं? लेकिन जब तक दयानन्द के सिपाही उपस्थित हैं, इनका भण्डा-फोड़ होता रहेगा। और सुनो मनोज दूहन, 1934 में सीकर राजस्थान में पण्डित जगदेव सिंह 'सिद्धान्ती' अपने शिष्य रघुवीर सिंह व आचार्य शान्तिस्वरूप के साथ पहुँचे थे। वहाँ किसानों के साथ जो अस्पृश्यता, शोषण का व्यवहार किया जाता था उसके विरुद्ध इन महाशयों ने सात दिन व सात रात प्रचार किया, शास्त्रार्थ किया व विजय प्राप्त की। चौ० छोटूराम भी उस समय इनके पक्ष में वहीं उपस्थित थे।

मनोज दूहन, पं० मनसाराम का वह शास्त्रार्थ याद करो जिसमें जाटों को यज्ञोपवीत न देने के लिए कुछ पौराणिक अड़े थे। पं० मनसाराम ने अन्त में पूछा कि तुम जाटों को किस वर्ण में मानते हो? पौराणिकों ने जाटों की ओर देखा और कहा, 'क्षत्रिय' वर्ण में। इस पर पं० मनसाराम ने कहा तो फिर दो यज्ञोपवीत। मनोज दूहन, क्या राम आदि क्षत्रिय यज्ञोपवीत नहीं पहनते थे?

और सुनो मनोज दूहन, पं० भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर के पास कुछ अंग्रेजों के एजेंट आए। उन्हें कहा गया कि आप 'जाटों' को लुटेरा लिख दो। इसके लिए एक बड़ी राशि की भी पेशकश की गई। पं० भगवद्दत्त ने कहा, ''Wrong Number, मैं इन्हें विदेशियों से लोहा लेने वाला क्षत्रिय वर्ण मानता हूँ।'' यह था दयानन्द को आदर्श मानने वाले का आदर्श!

लोहारू सत्याग्रह का तो पता लगाओ, मनोज दूहन! यहाँ हिन्दी सत्याग्रह में पंजाबी कुल में उत्पन्न हुए लोगों ने हिन्दी के पक्ष में सत्याग्रह किया, दलित परिवार में जन्मे उपदेशकों ने क्षत्रियों की वीर गाथाएँ सुनाई, क्षत्रिय परिवार में जन्मे लोगों ने दलितोद्धार के लिए जान की बाजी लगाई, ब्राह्मण कुल में जन्मे उपदेशकों ने ब्राह्मणवाद के नाम पर फैले आडम्बर, अन्धविश्वास पर जमकर प्रहार किया। शिक्षा की अलख जगाई और क्या कहें-''आजादीकी राही दिखाई दयानन्द नैं....।'' यह है दयानन्द का आदर्श! भाई मनोज दूहन, क्यों लोगों को धोखा देते हो? सत्य की राह पर वापिस लौट आओ।

यज्ञ योग साधना शिविर

दिनांक 7-8-9 मार्च, 2018 को बड़ा बाजार रोहतक में यज्ञ व योग शिविर का आयोजन किया गया। वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी देवर्षि विद्यापीठ नन्दगढ़ के सान्निध्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ व योग साधना शिविर में युवा, स्त्री-पुरुषों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। आचार्य जी ने यज्ञ व योग को अपनाने से होने वाले लाभों का भी वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत किया। स्वस्थ शरीर तभी संभव है जब मन विकारों से दूर रहे।

समाचार-प्रभाग

योग-ध्यान-साधना शिविर

जम्मू-काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू-काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माँ सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 8 से 15 अप्रैल 2018 तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है, जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाएगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषदादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में युवा एवं प्रभावशाली वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भांति सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम के पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में पहले लगाये गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं, इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० 09419107788, 09419796949 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-आनन्दभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

ग्रीष्मकालीन आर्य वीर प्रशिक्षण हेतु बैठक

आर्य वीर दल हरयाणा प्रान्त की ओर से इस बार पूरे हरयाणा में ग्रीष्म अवकाश (जून मास) में अनेक शिविरों का आयोजन करने हेतु प्रान्तीय संचालक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा श्री उमेद सिह शर्मा जी की अध्यक्षता में रविवार 1 अप्रैल, 2018 को दयानन्दमठ रोहतक में एक आवश्यक बैठक दोपहर 12 बजे आयोजित की जा रही है। सभी आर्य वीर दल के अधिकारियों एवं जिला वेदप्रचार मण्डलों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने सहयोगियों के साथ समय पर पहुँचे और बैठक को सफल बनायें। बैठक में आर्यसमाज में युवकों को जोड़ने और उन्हें नए कार्यक्रम बनाने हेतु विचार-विमर्श भी किया जाएगा।

-वेदप्रकाश आर्य, मंत्री, आर्य वीर दल हरयाणा

वेदान्त दर्शन का अध्यापन

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ की शाखा दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक में नवम्बर 2015 से नियमित रूप से प्रातः यज्ञ, वेदपाठ, वेदप्रवचन, कक्षा के रूप में क्रियात्मक योग, संस्कृत भाषा के साथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका व बृहदारण्यकोपनिषद् का अध्यापन कराया जा रहा है। आगे फाल्गुन कृ० 10/2014 तदनुसार 21 फरवरी, 2018 से स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक द्वारा स्वामी ब्रह्ममुनि जी कृत संस्कृत भाष्य सहित वेदान्त दर्शन का अध्यापन कराया जायेगा। स्वस्थ, समर्थ, अनुशासनप्रिय, विद्या इच्छुक विद्यार्थी तथा नवीन विद्यार्थी प्रवेश के लिए निवेदन व संपर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता-केवल ब्रह्मचारी (पुरुषों) के लिए। आयु 18 वर्ष से अधिक हो।

शैक्षणिक योग्यता-न्यूनतम 12वीं (शास्त्री व आचार्य श्रेणी को प्राथमिकता)

विशेषताएं-वैदिक दर्शनों के संस्कृत भाष्य सहित अध्यापन के साथ-साथ 11 उपनिषद्, महर्षि दयानन्द कृत कुछ ग्रंथ, वेदभाष्य के चुने हुए कुछ अध्याय, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, स्वयं के धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन के निर्माण हेतु प्रतिदिन ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण व निदिध्यासन अभिन्न अंग हैं। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक, वैराग्य, मनोनियंत्रण, यम-नियम, ध्यान-समाधि आदि सूक्ष्म विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आध्यात्मिक उन्नति के लिए 4-5 घण्टे मौन पालन का अवसर रहेगा।

सुविधाएं-प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित आवास-भोजन, बिस्तर-वस्त्र, घी-दूध, फल-पुस्तकादि वस्तुएं निःशुल्क प्राप्त होंगी।

सम्पर्क हेतु पता-

आचार्य जी, दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक (हरयाणा) 124001

चलभाष-

आचार्य नवानन्द जी आर्य-7027026175

स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक-7027026175

श्री निगममुनि जी-9355674547

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. वैदिक ज्ञानयोग महाविद्यालय गुरुकुलम् ग्राम जूआँ जिला सोनीपत — 17 से 18 मार्च 2018
2. आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल — 22 से 25 मार्च 2018
3. आर्यसमाज इसराना जिला पानीपत — 23 से 25 मार्च 2018
4. आर्यसमाज बालधनकलां (रेवाड़ी) — 12 से 13 मई 2018

-रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन

वेदप्रचार मण्डल सिरसा के प्रधान जगदीश सींवर शेखूपुरिया ने गाँव-गाँव में जाकर पाखण्डवाद, भ्रूणहत्या, नशाखोरी के लिए 13.02.2018 से सिरसा जिला के और फतेहाबाद के गाँव-गाँव में जाकर लोगों को आग्रह करेंगे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आज देश के अन्दर लड़कियों की जनसंख्या कम जाती जा रही है और लड़कों का नशे की ओर से ध्यान हटवाना चाहते हैं, इसी वजह से देश की तरक्की होगी। आज देश का उत्थान करने के लिए एक ही लक्ष्य है कि गाँव-गाँव में जाकर लोगों को जागरूक किया जाए। श्री जगदीश सींवर ने वेदप्रचार मण्डल फतेहाबाद के प्रधान श्री जयवीर आर्य जगदीश सींवर ने ओ३म् ध्वज देकर फतेहाबाद जिला से रवाना कर दिया है और पूरे फतेहाबाद जिला व सिरसा में मिलकर वेदों का प्रचार करेंगे। इस मौके पर भजनोपदेशक महेन्द्रपाल आर्य, सत्यपाल आर्य, बंसीलाल, रोशनलाल आर्य, अरुण ग्रोवर, जीवन आर्य, पंकज आर्य, सत्यदेव शास्त्री, बुधराम आर्य, मुकेश एडवोकेट, सुमन आर्य, सीमा आर्य, रमेश सैनी, बंसी आर्य को जगदीश सींवर ने मालाएं पहनाकर इस जत्थे को सिरसा व फतेहाबाद के गाँव-गाँव में जाकर प्रचार करेंगे।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

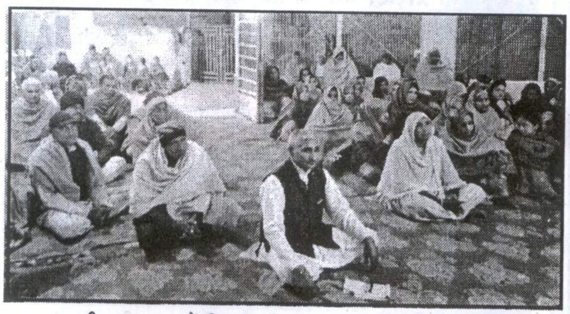

आर्यसमाज बनौंदी तहसील नारायणगढ़ जिला अम्बाला का वार्षिक उत्सव दिनांक 26 से 28 फरवरी 2018 तक मनाया गया। जिसमें आचार्य डॉ० विष्णु मित्र वेदार्थी बिजनौर उत्तर प्रदेश से पधारे और कई विषयों पर बहुत ही सारगर्भित व्याख्यान दिया तथा इसी प्रकार कुलदीप आर्य सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक के द्वारा बड़ी अच्छी प्रस्तुति की गई। त्रिदिवसीय वार्षिक उत्सव शान्तिपूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

—रघुवीर सिंह, मंत्री आर्यसमाज बनौंदी तहसील नारायणगढ़ जिला अम्बाला

नए आर्यसमाज की स्थापना

आर्यसमाज लोहगढ़ तहसील डबवाली जिला सिरसा में नई आर्यसमाज की स्थापना हुई जिसमें श्री दिनेश पथिक भजनोपदेशक पहुँचे। इस मौके पर जगदीश सींवर ने नई आर्यसमाज खुलने पर धन्यवाद किया। प्रधान-श्री गिन्द्रपाल, उपप्रधान-श्री जगदीश मोटन, कोषाध्यक्ष-ज्योतिलाल (काला) आदि तथा कार्यकारिणी का गठन किया गया।

निर्वाचन

आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला पलवल में दिनांक 1.3.2018 को प्रात: यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में एक आमसभा हुई जिसमें श्री डालचन्द प्रभाकर (श्री दयालु मुनि) की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से द्विवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी नियुक्त हुए- प्रधान-श्री धर्मवीर आर्य, उपप्रधान-श्री कर्णसिंह आर्य, मंत्री-श्री राजवीर आर्य, उपमंत्री-श्री जगदीश आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री कवि रूपचन्द आर्य, अंकेक्षक-मा० मोहरपाल आर्य, प्रचारमंत्री-श्री रणजीत आर्य श्री जगवीर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-श्री सुरेन्द्र आर्य, संरक्षक-श्री भजनलाल आर्य, आचार्य बलवीर, श्री तेजपाल, श्री दयालु मुनि, वीरेन्द्र आर्य, श्री शंकरलाल भारद्वाज, मा० शिवसिंह।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

भक्त फूलसिंह का जन्मदिन मनाया गया

दिनांक 24 फरवरी, 2018 को भक्त फूलसिंह जी का जन्म दिन गांव माहरा जिला सोनीपत के सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री रमेश आर्य ने यज्ञ से प्रारम्भ की जिसमें सभी अध्यापक अध्यापिकाएं, प्रिंसिपल ने अपनी आहुति डाली तथा स्कूल के सभी मुख्य छात्र एवं छात्राओं की भी आहुति डलवाई। अमृतसर से पधारे दिनेश पथिक ने अपने सुमधुर भजनों द्वारा सबका मन मोह लिया। भक्त फूलसिंह जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए मा० ओमप्रकाश जी ने कहा कि ऐसी विभूति कभी-कभी जन्म लेती है और हमारा सौभाग्य है कि उस आत्मा ने हमारे गांव में जन्म लेकर हमारे गांव का ही नहीं पूरे प्रदेश का नाम रोशन किया। बच्चों से संकल्प कराते हुए याद दिलाया कि अगर हमारा लक्ष्य ठीक हो और हम पूरे मनोयोग से पुरुषार्थ करे तो कोई भी ताकत हमें रोक नहीं सकती। प्रिंसिपल साहब ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम साल में नहीं महीने में होने चाहिएं। कार्यक्रम में श्री धर्मपाल आर्य सोनीपत, श्री दयानन्द ठरू, श्री लालसिंह सब इंस्पैक्टर सोनीपत, ओमप्रकाश माहरा तथा गांव से भी अनेक व्यक्ति कार्यक्रम में पधारे। सभी को प्रसाद वितरण किया गया।

मासिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक 18 फरवरी, 2018 को आर्यसमाज अशोक विहार, मालवीय नगर, सोनीपत में हर महीने की तरह तीसरे रविवार को सायं 3-5 बजे तक मासिक सत्संग हुआ जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ मा० ओमप्रकाश मंत्री आर्यसमाज द्वारा करवाया गया। इसमें भजन हुए, जिसमें जिला सोनीपत वेदप्रचार मण्डल के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री प्रेमसिंह दहिया ने स्वामी दयानन्द जीवनी भजन के माध्यम से सुनाई। सायं 4-5 बजे तक आचार्य पवनवीर आदर्श गुरुकुल दुधली उत्तर प्रदेश द्वारा समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के बारे में प्रवचन दिया। सायं 5 बजे प्रो० नारायण सिंह दहिया प्रधान आर्यसमाज द्वारा सभी का धन्यवाद किया गया तथा हर महीने तीसरे रविवार को सायं 3-6 बजे स्थानीय आर्यसमाज में आने के लिए निवेदन किया। अन्त में शान्तिपाठ के बाद श्री अजीतसिंह जी कोषाध्यक्ष आर्यसमाज अशोक विहार मालवीय नगर द्वारा प्रसाद वितरण करवाया गया।

-नारायणसिंह दहिया आर्य, प्रधान आर्यसमाज

पण्डित नन्दलाल निर्भय को पुत्र शोक

आर्यजगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान्, सिद्धहस्त लेखक, ओजस्वी कवि पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य, ग्राम बहीन जिला पलवल (हरयाणा) के ज्येष्ठ पुत्र श्री ब्रह्मदेव आर्य का गत दिनों हृदयगति रुक जाने से पार्क अस्पताल फरीदाबाद (हरयाणा) में निधन हो गया जिसका शान्तियज्ञ आचार्य श्री नेतराम शास्त्री होडल (हरयाणा) ने तिथि 18.02.2018 को पूरा कराया तथा बताया कि आत्मा अमर है तथा शरीर नश्वर है। मानव तन सबसे कीमती है, इसलिए हमें इसका महत्त्व समझते हुए सदैव शुभ कर्म करने चाहिएं। आचार्य जी के प्रवचन के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा हुई।

श्रद्धांजलि सभा में श्री उदयभान विधायक होडल (हरयाणा) ने कहा कि पं० नन्दलाल निर्भय जैसे ईश्वरभक्त महात्मा देशभक्त हैं, ऐसे ही श्री ब्रह्मदेव शर्मा थे। हमें भी सच्चा देशभक्त बनना चाहिये। श्री बालकिशन आर्य वेदप्रचारक ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भेजा गया शोकपत्र एवं सान्त्वना संदेश पढ़कर सुनाया। हरयाणा के प्रसिद्ध अधिवक्ता चौ० राजेन्द्र सिंह पलवल ने दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा पंडित नन्दलाल निर्भय के परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। शान्तिपाठ के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का समापन हुआ।

-जगदीश चन्द्र आर्य, महामंत्री वैदिक धर्म सेवा समिति बहीन (पलवल)

ऋषिवर के उपकार.... पृष्ठ 4 का शेष.....

ऋषिवर ने जिस व्यवस्था के विरुद्ध जीवनभर संघर्ष किया वह व्यवस्था स्वतन्त्र भारत में और अधिक बलवती होकर फल-फूल रही है। गुरुडमवाद की घिनौनी छवि के रूप में कथित धर्मगुरुओं की काली करतूतें हम सबके सामने है। सरल स्वभाव की भोली-भाली जनता इन मठाधीशों के मकड़जाल में उलझकर अपना सब कुछ खो देती है। 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत'। समय पुकार रहा है, आर्यवीरो उठ खड़े हो, समाज से अविद्या व अन्धकार को दूर भगने के लिए। शुद्ध संकल्प से आगे बढ़ें। प्यारे ऋषि को शत-शत नमन।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द बहु - उद्देश्यीय सभागार उद्घाटन समारोह

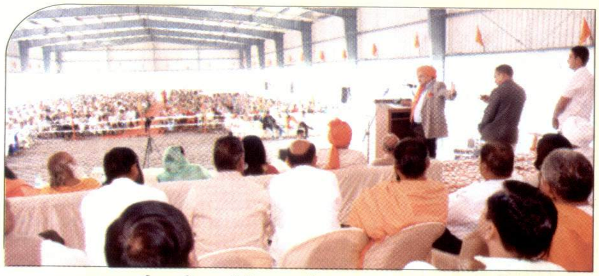

उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्यातिथि श्री बीरेन्द्र सिंह।

उद्घाटन समारोह में मुख्यातिथि श्री बीरेन्द्र सिंह को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारीगण।

उद्घाटन समारोह में डा० राजेन्द्र विद्यालंकार को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारीगण।

उद्घाटन समारोह में मुख्यवक्ता आचार्य सोमदेव को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारीगण।

उद्घाटन समारोह में डा० आर. एस. सांगवान को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारीगण।

उद्घाटन समारोह में श्रीमती सुनीता दुग्गल को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारीगण।

उद्घाटन समारोह में श्री दलीप सिंह कैथल को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारीगण।

उद्घाटन समारोह में श्री अत्तरसिंह स्नेही को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारीगण।

उद्घाटन समारोह में सभाप्रधान को 1 लाख रु. का चैक प्रदान करते हुए डा० आर. एस. सांगवान।

उद्घाटन समारोह में श्री बच्चन सिंह व श्री मनीष अग्रवाल को सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारीगण।

केंद्रीय मंत्री ने दयानंद मठ में किया बहुउद्देशीय सभागार का उद्घाटन

आजादी से अब तक सभी को साथ लेकर चलने में आगे आर्य समाज

रोहतक। दयानंद मठ में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए केंद्रीय इस्पात मंत्री बीरेंद्र सिंह व कार्यक्रम में मौजूद आर्य समाजी। फोटो : हरिभूमि

रोहतक। दयानंद मठ में स्वामी स्वतंत्रानंद बहुउद्देशीय सभागार का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय इस्पात मंत्री बीरेंद्र सिंह। फोटो : हरिभूमि

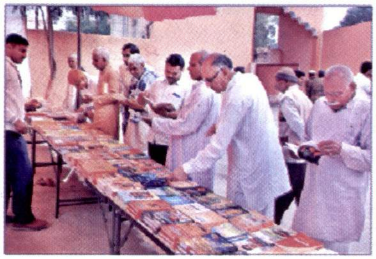

रोहतक। दयानंद मठ में आयोजित कार्यक्रम के दौरान पुस्तक देखते हुए लोग। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

केंद्रीय इस्पात मंत्री बीरेंद्र सिंह ने रविवार को दयानंद मठ में स्वामी स्वतंत्रानंद बहुउद्देशीय सभागार का उद्घाटन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के ओएसडी डॉ. राजेंद्र ने की। इस मौके पर हवन किया और मास्टर रामपाल आर्य ने चौ. बीरेंद्र सिंह का पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। बीरेंद्र

- भगत सिंह का भी आर्य समाज से लगाव था
- आजादी के समय से भी आर्य समाज मजबूत रहा
- मास्टर रामपाल आर्य ने सभा की उपलब्धियां बताई
- चौ. बीरेन्द्र सिंह का पगड़ी पहनाकर स्वागत किया

सिंह ने कहा कि समाज के सभी लोगों को गले लगाकर साथ लेकर चलने में आर्य समाज आज भी नंबर वन है। आजादी के समय में भी आर्य समाज मजबूत रहा है। उन्होंने कहा कि शहीद भगत सिंह का भी आर्य समाज से लगाव था। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से करवाए गए उद्घाटन समारोह में मास्टर रामपाल आर्य ने सभा की उपलब्धियां बताई। इससे पहले राजस्थान के अजमेर से वैदिक विद्वान आचार्य सोमदेव मुख्यवक्ता रहे। वहीं मंच का संचालन सभा के मंत्री उमेद सिंह शर्मा ने किया।

यज्ञ से हुआ कार्यक्रम का शुभारंभ

कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह यज्ञ से किया गया। जिसके ब्रह्मा आचार्य सर्वमित्र आर्य करनाल आर्य विद्या परिषद् हरयाणा रहे। यज्ञ के यजमान अनिल आर्य एवं सुभाष सोलंकी, भगतौर आर्य एवं कार्तिकेय आर्य, राज खुराना एवं बलराज खुराना आदि रहे। सभा के संरक्षक स्वामी धर्मदेव ने प्रवचन दिया और सुमित्रा आर्या सभा कोषाध्यक्ष ने यज्ञ पर ईश्वरभक्ति के गीत भी प्रस्तुत किए। भजनोपदेशक कुलदीप भास्कर, सत्यपाल मधुर, हनुमत प्रसाद आर्य, वेदप्रकाश मंडल महेन्द्रपाल के प्रधान इन्द्रलाल आर्य ने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

इस मौके पर सुनीता बुडाना, कन्हैयालाल आर्य, डॉ. मोहनलाल एवं सतीश बंसल, रमेश आर्य, बंसीलाल आर्य, जगदीश सीकर व कमला आर्या सहित आर्य समाज के तमाम सदस्य मौजूद रहे। समारोह में आर्य समाज के लोगों ने सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास करते रहने का संकल्प लिया।

दयानंद मठ में स्वामी स्वतंत्रानन्द बहुउद्देशीय सभागार का उद्घाटन, केंद्रीय मंत्री बोले-आर्य समाज का दायरा सिमटना चिंता का विषय

कमजोर हुआ भाईचारा, आर्य समाज निभाए सक्रिय भूमिका

अमर उजाला ब्यूरो

रोहतक।

केंद्रीय मंत्री बीरेंद्र सिंह का मानना है कि पिछले कुछ समय में प्रदेश के अंदर भाईचारा कमजोर हुआ है, जिसे दोबारा से मजबूत करने में आर्य समाज महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

वे रविवार को गोहाना रोड स्थित दयानंद मठ में स्वामी स्वतंत्रानन्द बहुउद्देशीय सभागार का उद्घाटन के बाद मीडिया से बातचीत कर रहे थे। मंत्री बीरेंद्र सिंह ने कहा कि प्रदेश में महर्षि दयानंद के सबसे ज्यादा शिष्य थे। स्वामी दयानंद की शिक्षाओं पर चलकर न केवल प्रदेश आगे बढ़ा, बल्कि देश की सीमा पर भी सबसे ज्यादा फौजी हरियाणा से हैं और खेलों में भी परचम लहरा रहे हैं। बावजूद इसके प्रदेश में कुछ समय से सामाजिक ताना बाना बिगड़ना चिंता का विषय है।

कुछ समय से आर्य समाज का दायरा कम जरूर हुआ है, लेकिन अब भी आर्य समाज सामाजिक सद्भाव को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा सकता है। वहीं, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने समारोह की अध्यक्षता की, जबकि मुख्यवक्ता वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव अजमेर (राजस्थान) रहे। मंच का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री उमेद सिंह शर्मा ने किया।

इससे पहले 9 बजे आचार्य सर्वमित्र आर्य ने हवन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की, जहां अनिल आर्य, सुभाष सोलंकी, भगतौर आर्य एवं कर्णसिंह आर्य, राज खुराना व बलराज खुराना यजमान रहे।

सभा के संरक्षक स्वामी धर्मदेव ने प्रवचन दिया तथा बहन सुमित्रा आर्या सभा कोषाध्यक्ष ने यज्ञ पर ईश्वरभक्ति के गीत भी प्रस्तुत किये। भजनोपदेशक कुलदीप भास्कर, सत्यपाल मधुर, हनुमत मकड़ौली, वेदप्रकाश मंडल महेन्द्रपाल के प्रधान इन्द्रलाल आर्य ने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

1 करोड़ से बनाया सभागार

सभा के अध्यक्ष मास्टर रामपाल ने बताया कि स्वामी स्वतंत्रानन्द बहुउद्देशीय सभागार का निर्माण एक करोड़ की लागत से किया गया है। सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए सभा द्वारा वैदिक प्रचार समिति का गठन किया गया है, जो गांव-गांव जाकर स्पेशल वाहन से प्रचार कर रही है। अब तक प्रदेश में 1959 गांवों में वेदों का प्रचार किया जा चुका है। छह मास में प्रदेश के प्रत्येक गांव में प्रचार का लक्ष्य पूरा कर लिया जाएगा।

रोहतक के दयानंद मठ में रविवार को आयोजित समारोह में संबोधित करते केन्द्रीय इस्पात मंत्री बीरेन्द्र सिंह हुमायूं और मौजूद लोग। अमर उजाला

- केंद्रीय मंत्री बोले- स्वामी दयानंद के शिष्य सबसे ज्यादा हरियाणा के लोग रहे
- हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के ओएसडी डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार भी पहुंचे
- राजस्थान से आचार्य सोमदेव रहे मुख्य वक्ता

पगड़ी बांधकर स्वागत

समारोह स्थल पर पहुंचने पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मास्टर रामपाल आर्य ने केंद्रीय मंत्री बीरेंद्र सिंह का पगड़ी बांधकर स्वागत किया। कन्हैयालाल आर्य, उमेद शर्मा, आचार्य सर्वमित्र आर्य, डाक्टर मोहनलाल एवं सतीश बंसल ने शॉल एवं स्मृति चिह्न भेंट किया। डाक्टर राजेन्द्र विद्यालंकार को रमेश आर्य, बंसीलाल आर्य, जगदीश सीकर एवं कमला आर्या रेवाड़ी द्वारा चद्दर व स्मृति चिह्न भेंट किया गया। इस मौके पर वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव, रोशनलाल आर्य, वीरेन्द्र यादव, दलीप सिंह, सत्यप्रकाश आर्य एवं सदानन्द बराड़, डाक्टर आरएस सांगवान, रघुबीर, करवीर चौधरी, दलीप सिंह आर्य, राजेन्द्र शर्मा व पृथ्वीसिंह बोर भी मौजूद रहे।

प्रधान इन्द्रलाल आर्य ने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रतिष्ठा में ....

....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

– सम्पादक उमेद शर्मा